विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 2 : नई दिल्ली : 5 -11 अप्रेल 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों में सानन्द सुखसातापूर्वक निरंतर यात्रायित हैं। कोयम्बत्तूर के बाद कोच्चि के सिवाय पूज्यप्रवर का किसी भी एक स्थान पर निरंतर दो रात्रियों का प्रवास नहीं हुआ है। इन दिनों गर्मी तीव्रता लिए हुए है, किन्तु प्रायः रात्रि में मौसम सुहावना बन जाता है। शिवकाशी, मदुरै, ईरोड़, सेलम आदि क्षेत्रों से क्रमशः निकटता बढ़ती जा रही है। आगामी दिनों में महावीर जयन्ती, अक्षयतृतीया, दीक्षा समारोह, आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस, आचार्यप्रवर का जन्मोत्सव, पट्टोत्सव और दीक्षोत्सव आदि कई कार्यक्रम समायोज्य हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

कन्याकुमारी की ओर बढ़ते चरण

२४ मार्च। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः कोट्टार (नागरकोइल) से कोट्टारम की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर के कन्याकुमारी पदार्पण के संदर्भ में देश के विभिन्न प्रान्तों के श्रद्धालु भी कन्याकुमारी पहुंच रहे हैं। कई श्रद्धालुओं ने आज विहार मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। हजारों-हजारों वृक्षों, पहाड़ों, सरोवरों आदि से युक्त यह मार्ग रमणीय रूप धारण किए हुए है। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों कन्याकुमारी के निकट हो रहे हैं, त्यों-त्यों प्राकृतिक सौन्दर्य में भी वर्धमानता देखने का मिल रही है। आबादी की निरंतरता अब दिखाई नहीं दे रही है। यह क्षेत्र शान्तिप्रिय और प्रकृतिप्रिय मानव को आकर्षित करने में सक्षम प्रतीत हो रहा है।

मार्ग के बांयीं ओर स्थित सिरडी वाले सांई बाबा के मन्दिर 'आनंद आलयम' से संबंधित लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर मन्दिर परिसर में पधारे। मंदिर परिसर के इंचार्ज श्री कद्रीवेल, श्री अरुणाजलम आदि ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया। मन्दिर से संबद्ध श्री पौन्नम बलम ने बताया कि पचास वर्ष पूर्व जब आचार्य तुलसी यहां आए थे, तब मुझे उनकी सेवा का अवसर मिला था। मन्दिर की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष पुष्पमाला, कलश, नारियल आदि प्रस्तुत किए गए, किन्तु पूज्यप्रवर ने उन लोगों के मात्र मंगलभावों को स्वीकार किया। लगभग १२.७ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर कोट्टारम में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। कोट्टारम में आज सायं तक का प्रवास हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री चन्द्रन ने पूज्यप्रवर को नमन कर भावभीना स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर और मेघकुमार के प्रसंग को सुनाकर लोकोत्तर दया को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

आज अपराह्न में भारत सरकार के वित्त राज्य मंत्री तथा जहाजरानी राज्य मंत्री श्री पोनराधाकृष्ण ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की।

ग्यारह हजार कि.मी. से भी ज्यादा चलकर ग्यारहवें अनुशास्ता पहुंचे कन्याकुमारी

यद्यपि पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर २५ मार्च को कन्याकुमारी पधारने वाले थे, किन्तु साधु-साध्वियों के स्थान की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए आचार्यप्रवर ने आज ही कन्याकुमारी पधारना स्वीकार कर लिया। तदनुसार आज सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर ने कोट्टारम से कन्याकुमारी के लिए प्रस्थान किया।

तीन समुद्रों के संगम स्थल की ओर गतिमान आचार्यप्रवर के पीछे की ओर पहाड़ दृष्टिगोचर हो रहे थे। कहीं-कहीं अस्ताचलगामी सूर्य विहार मार्ग से कुछ दूरी पर लहरा रहे समुद्र में अपनी अरुण आभा बिखेरे हुए दिखाई दे रहा था। पूज्यप्रवर लगभग ४.५ कि.मी. का विहार कर धरती के छोर पर स्थित कन्याकुमारी में पधारे। स्टेला मेरीस इंस्टिट्युट ऑफ डवलपमेंट स्टडीज में आज का रात्रिकालीन और कल (२५ मार्च) सायं तक का प्रवास हुआ।

भारत के कई किनारों (नेपाल, भूटान, बंगलादेश और पाकिस्तान के समीपवर्ती) और तीन देशों को अपनी चरणधूलि से पावन करने वाले ज्योतिचरण आज धरती के छोर पर स्थित कन्याकुमारी में शोभायमान हो रहे थे। इस शोभा के पीछे उनकी दृढ़ संकल्पनिष्ठा, अद्‌भुत सहिष्णुता, प्रखर पुरुषार्थिता, लक्ष्य प्राप्ति की तीव्र अभीप्सा, भक्तवत्सलता, अडोल निडरता, अनुपमेय समता आदि का दर्शन हो रहा था। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों दिशाओं में जैन शासन और तेरापंथ धर्मसंघ की यशःपताका फहराने वाले मानवता के मसीहा आचार्यप्रवर ने अनगिन कष्टों, बाधाओं, कठिनाइयों, प्रतिकूलताओं को रौंदकर इस मुकाम को प्राप्त किया था, इसलिए दो दिनों के लिए हजारों श्रद्धालुओं का मुकाम भी कन्याकुमारी बन गया। सैंकड़ों-सैंकड़ों लोग इस दृश्य को प्रत्यक्ष निहारने की ललक लिए कन्याकुमारी पहुंच गए थे तो मजबूरी में न आ सकने वाले हजारों लोग परोक्ष रहते हुए भी इस दृश्य को आधुनिक मीडिया के माध्यम से प्रत्यक्ष देखने के लिए लालायित थे।

फौलादी संकल्पों के धनी आचार्यप्रवर दो नन्हें और कोमल चरणों से धरती पर करीब ४६००० से भी ज्यादा किलोमीटर चलने के बाद तीन सागरों के तट पर पहुंचे तो चतुर्विध धर्मसंघ में उत्साह, उल्लास और उमंग का सागर हिलोरें लेने लगा। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर ६ नवम्बर २०१४ को भारत की राजधानी दिल्ली से अहिंसा यात्रा प्रारंभ कर भारत के सोलह राज्यों और तीन देशों की यात्रा कर समुद्रत्रय के संगम स्थल पर पधारे तो अपनी त्रिआयामी अहिंसा यात्रा के दौरान उनके द्वारा तय की गई दूरी करीब ११७७१ कि.मी. हो गई।

यद्यपि आचार्यश्री महाश्रमण कन्याकुमारी में पधारने वाले तेरापंथ के आचार्यों में दूसरे आचार्य हैं, किन्तु इतनी प्रलम्ब और भारत के पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी भू-भाग की संलग्न रूप में यात्रा करते हुए कन्याकुमारी में आचार्यप्रवर का आना तेरापंथ धर्मसंघ का पहला प्रसंग है। सन् १९६९ में परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी अपनी दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान यहां पधारे थे और करीब ठीक पचास वर्षों बाद उन्हीं के सुशिष्य और परंपर पट्टधर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी भारत और विदेशों की यात्रा करते हुए यहां पधारे हैं। आचार्यप्रवर ने अपने चरणों से न केवल नेपाल, भूटान, बंग्लादेश और पाकिस्तान के परिपार्श्ववर्ती क्षेत्रों की यात्रा की, अपितु अपने गुरु द्वारा अस्पृष्ट नेपाल व भूटान देश और भारत के असम, मेघालय व नागालैण्ड राज्यों को भी अपनी चरणरज से पावन किया। आचार्यप्रवर ने वाराणसी यात्रा के बाद से पटना पहुंचने से पूर्व तक करीब दो वर्षों तक उन्हीं क्षेत्रों की यात्रा की, जहां उससे पहले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के किसी भी आचार्यप्रवर का पदार्पण नहीं हुआ था।

तीन समुद्रों (हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी) के संगम स्थल तथा धरती का छोर होने के कारण कन्याकुमारी की पर्यटन स्थल के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान है। समुद्र में डूबते और समुद्र से ही उगते सूर्य का दृश्य पर्यटकों को और अधिक लुभाता है। आचार्यप्रवर के पदार्पण से इस पर्यटन स्थल में पर्यटकों की संख्या काफी बढ़ गई थी, किन्तु वे पर्यटक अध्यात्म के महासागर (आचार्यप्रवर) की उपस्थिति में ही तीन सागरों को देखना चाहते थे और सदा सतत तेजस्विता युक्त रहने वाले देदीप्यमान सूर्य (आचार्यप्रवर) की साक्षी में ही उदित और अस्त होते भौतिक सूर्य को निहारना चाहते थे।

भौतिक मौज-मस्ती का यह स्थान आचार्यप्रवर के पदार्पण से आध्यात्मिक आनंद का केन्द्र बन गया। समुद्र किनारे जहां एक ओर अन्य लोग सेल्फी, फोटो, खाने-पीने, खरीददारी आदि में लीन थे, वहीं महाश्रमण भक्त समुद्रतट पर भी सामायिक, ध्यान, जप की मुद्रा में बैठे दिखाई दे रहे थे। श्रद्धालुओं की ये मुद्राएं अन्य सैंलानियों

में कुतूहल और आश्चर्य के भाव उत्पन्न कर रही थीं, किन्तु वे लोग ज्योंही इस आध्यात्मिक वातावरण के कारण की खोज में सफलता प्राप्त कर रहे थे, उनके हृदय में भी आचार्यप्रवर के प्रति सहज श्रद्धा का भाव प्रस्फुटित हो रहा था।

सागरों के तट पर सजा महाश्रमण समवसरण

२५ मार्च। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम प्रवास स्थल से करीब पौन कि.मी. दूर हिन्द महासागर और अरब सागर के तट पर आयोजित हुआ। कुछ ही दूरी पर बंगाल की खाड़ी भी दिखाई दे रही थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मंगल प्रवचन के पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में ज्ञान और आचार के महत्त्व को विवेचित किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मैं कल आ रहा था तो मुझे बताया गया कि पीछे पहाड़ हैं और आगे सागर हैं यानी हम पहाड़ और सागर के बीच में चल रहे हैं। सूर्य का अपना महत्त्व है, सागर का अपना महत्त्व है और पहाड़ का अपना महत्त्व है। सूर्य कितना प्रकाशमान है। वह तो मानों वात्सल्य परिपूर्ण पिता/दादा के समान है। कोई उसे कुछ भी कह दे, वह आक्रोश नहीं करता है। सागर में कितनी विशालता होती है। कवि ने कहा है कि पहाड़ में उच्चता होती है, किंतु गहराई नहीं होती और सागर में गहराई होती है, किंतु उच्चता नहीं होती, परन्तु मनस्वी पुरुष में सागर की-सी गहराई और मेरु पर्वत जैसी ऊंचाई भी हो सकती है (पूज्यप्रवर ने 'स्वामीजी! थांरी साधना री मेरुं सी ऊंचाई....' गीत का आंशिक संगान किया।)

यदि आत्मा में साधना और ज्ञान दोनों का विकास हो जाए तो वह ऊंचाई और गहराई दोनों को प्राप्त हो जाती है। सृष्टि में सूर्य, चन्द्रमा, सागर, पहाड़ आदि का अपना स्थान है, महत्त्व है। इस सृष्टि में आत्मा भी ऐसा तत्त्व है, जिसमें अनन्त ज्ञान होता है। यथाख्यात चारित्र आ जाता है तो चारित्र की भी कितनी ऊंचाई हो जाती है। हम ज्ञान की गहराई और आचार की ऊंचाई को वृद्धिगंत करते रहें। सागर में तरंगे उठती हैं, तब सागर कितना अच्छा लगता है। हमारे भीतर ज्ञान की तरंगे उठती रहें और राग-द्वेष की तरंगे शान्त रहें, ऐसा प्रयास काम्य है। हमारा ज्ञान सागर तरंगायमान रहे और मोह सागर शांत रहे, यह हमारी आत्मा के लिए कल्याणकारी हो सकता है।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् जिज्ञासा-समाधान आदि का उपक्रम रहा, जिसके अंतर्गत संतों, समण, साध्वियों और श्रावकों की जिज्ञासाओं को पूज्यप्रवर ने समाहित किया। इस क्रम में मुनि अनेकांतकुमारजी ने आचार्यप्रवर के कन्याकुमारी पदार्पण के संदर्भ में गीत का संगान भी किया। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'धम्म जागरणा' को जैन विश्व भारती के निवर्तमान अध्यक्ष श्री रमेश बोहरा, साहित्य विभाग के संयोजक श्री धर्मचन्द लूंकड़ आदि ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया।

सागरों और सूर्यों के मिलन का मनोहारी दृश्य

आज सायंकाल करीब ५.३० बजे आचार्यप्रवर कन्याकुमारी के स्टेला मेरिस इंस्टिट्यूट ऑफ डवलपमेंट स्टडीज से कन्याकुमारी में ही स्थित 'अर्बन हाट' की ओर प्रस्थित हुए। स्टेला मेरिस इंस्टिट्यूट से संबद्ध सिस्टर जिन्नी रोज ने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञभाव अर्पित किए। आचार्यप्रवर कुछ अतिरिक्त दूरी तय कर जैन भवन में पधारे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां यहीं प्रवासित थीं। पूज्यप्रवर वहां कुछ क्षण आसीन हुए। जैन भवन से संलग्न ही भगवान महावीर का मंदिर निर्मित है। बताया गया कि यह भवन और यह मंदिर कुछ ही समय पूर्व निर्मित हुआ है। इसके बाद से कन्याकुमारी में जैन साधु-साध्वियों का आवागमन कुछ बढ़ा है। आचार्यप्रवर अरब सागर के निकटस्थ मार्ग पर पधारे। सैंकड़ों की संख्या में साथ चल रहे श्रद्धालुओं के हुजूम के बीच गतिमान अहिंसा यात्रा के महानायक और उनके कारवां को अन्य लोग विस्फारित नयनों से निहार रहे थे। आचार्यप्रवर और अहिंसा

यात्रा के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर पूज्यप्रवर की अभिवंदना में उन लोगों के हाथ स्वतः जुड़ रहे थे और सिर श्रद्धा से प्रणत बन रहे थे।

पूज्यप्रवर पूर्व दिशा में गतिमान थे। सामने की ओर बंगाल की खाड़ी थी, दांयीं ओर हिन्द महासागर लहरा रहा था तथा कुछ दांयीं ओर व कुछ पीछे की ओर स्थित अरब सागर के ऊपर दिखाई दे रहा सूर्य अस्ताचलगामी बना हुआ था। तीनों समुद्रों के संगम स्थल के आसपास निर्मित विवेकानन्द स्मारक और संत तिरुवल्लुवर की विशाल मूर्ति दिखाई दे रही थी। सूर्यास्त के समय की निकटता के कारण पूज्यप्रवर को उदकपान (जल ग्रहण करने) करने के लिए कहीं आसीन होना था। मुनिवृन्द ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि प्रवास स्थल अब ज्यादा दूर नहीं है, इसलिए कुछ समय समुद्र तट पर आसीन होने की कृपा करें। आचार्यप्रवर ने संतों के अनुरोध को सहजता के साथ स्वीकार किया और समुद्र के निकट बनी एक बेंच पर दक्षिणाभिमुख विराजमान हुए। अब सामने हिन्द महासागर और अरब सागर लहरा रहे थे तो कुछ ही दूरी पर बंगाल की खाड़ी दृष्टिगोचर हो रही थी। अध्यात्म के महासागर (आचार्यप्रवर) के सामीप्य से सागरों की शोभा और भी बढ़ गई थी। यदा-कदा वेग के साथ उठती कई लहरों की ध्वनि वातावरण को तरंगित कर रही थी। उन लहरों के साथ पानी पूज्यचरणों की ओर बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था मानों सागर हर दिशा को पावन करने वाले पूज्यप्रवर के चरणयुगल का अभिषेक करने के लिए आतुर हैं। हालांकि आचार्यप्रवर कुछ ऊंचाई पर आसीन थे, इसलिए पूज्यचरणों का स्पर्श कर पाना पानी के लिए संभव प्रतीत नहीं हो रहा था।

अरुण आभा लिए हुए दांयीं ओर स्थित सूर्य अस्ताचल की ओर गतिमान था। ज्यों-ज्यों वह ढलता जा रहा था सागर के पानी को भी अपने रंग में ढालता जा रहा था। आचार्यप्रवर ने सूर्य को निहारा तो ऐसा लगा मानों दो सूर्यों का मिलन हो रहा हो। सदा सतत प्रकाश बांटने वाले देदीप्यमान सूर्य (आचार्यप्रवर) और अस्ताचलगामी सूर्य का लहराते समुद्रों के तट पर होने वाला यह मिलन दर्शकों के लिए मनमोहक दृश्य उत्पन्न कर रहा था। आचार्यप्रवर जहां आसीन थे, वहां से कुछ ही दूरी पर 'व्यू टावर' बना हुआ था, जहां सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों दृश्य देखे जा सकते हैं। सूर्यास्त के समय की निकटता के साथ उस टावर पर पर्यटकों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। कुछ संत भी उस टावर पहुंच गए। आचार्यप्रवर ऐसे मनोहारी प्राकृतिक दृश्य के बीच भी प्रायः ध्यान की मुद्रा में आसीन थे। पूज्यप्रवर की इस मुद्रा से वातावरण की प्राकृतिक छटा और भी निखर गई। कुछ श्रद्धालुजन अपने मोबाइल के कैमरों में इस दृश्य को संजोने में लीन थे तो सैंकड़ों श्रद्धालु अपने हृदय में इस दृश्य को चिरकाल के लिए अंकित कर रहे थे।

तीन समुद्रों के तट पर रात्रि प्रवास

पूज्यप्रवर सूर्यास्त से करीब दस मिनिट पूर्व वहां से प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हुए और समीपस्थ 'अर्बन हाट' में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। 'अर्बन हाट' के मैनेजर श्री लक्ष्मणन आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया। सायंकालीन विहार करीब १.२ कि.मी. का रहा।

'अर्बन हाट' के सामने ही अरब सागर और हिन्द महासागर लहरा रहे थे। तीनों समुद्रों का संगम स्थल भी बहुत निकट था। समुद्र में स्थित विवेकानन्द स्मारक और संत तिरुवल्लुवर की मूर्ति रात्रि में विद्युत के प्रकाश में आकर्षक दिखाई दे रहे थे। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के ठीक पीछे 'लाइट हाउस' था, जिसमें से तीव्र रोशनी निकल रही थी। इस लाइट को इस रूप में लगाया गया था कि वह पंखें की भांति गोल-गोल घूम रही थी। बताया गया 'लाइट हाउस' का प्रकाश कई किलोमीटर दूर तक जाता है जो कि जहाजों के चालकों को तट की निकटता की सूचना देता है, जिससे वे खतरनाक चट्टानों आदि से सावधानी रख सकें। प्राचीन समय में यह कार्य आग जलाकर किया जाता था, बाद में विद्युत आदि कई साधनों से इसकी पूर्ति होने लगी। वर्तमान आधुनिक युग में 'जी. पी.आर.एस.' आदि तकनीक सहित अन्य उन्नत सुविधाओं ने लाइट हाउस की उपयोगिता भी काफी कम कर

दी है। तीन सागरों के तट पर रात्रि के अंधेरें में चांद, तारे और विशेष रूप से ध्रुवतारा और सप्तर्षि मंडल मनमोहक रूप में दिखाई दे रहे थे।

और....छू लिया धरती का छोर

२६ मार्च। आज का बृहत् मंगलपाठ और मुख्य प्रवचन कार्यक्रम सूर्योदय के कुछ ही समय पश्चात् तीन सागरों के तट पर समायोज्य था। कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम हेतु व्यवस्था भी कर दी थी। उत्साहित सैंकड़ों लोग प्रातः अपने-अपने वाहन आदि लेकर वहां पहुंच गए। हर ओर भक्ति भावों से ओतप्रोत श्रद्धालुजन छाए हुए थे। वर्षों से इस स्थान पर कार्यक्रम करने हेतु प्रयासरत समुदाय विशेष के लोगों ने जब कार्यक्रम की भव्य व्यवस्थाओं को देखा तो उन्होंने स्थानीय प्रशासन के पास आपत्ति दर्ज करवाई। इस आपत्ति के बाद डीएसपी श्री भास्करन कार्यक्रम स्थल पर आए, उन्होंने अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि इस कार्यक्रम को और कहीं आयोजित किया जाए, क्योंकि यह स्थान संवेदनशील है। यहां कार्यक्रम आदि करने के लिए दो संप्रदायों के बीच वर्षों से तनाव चल रहा है। आप मेरा अनुरोध स्वीकार कर मुझे इस समस्या से उबारें। कार्यकर्ता उनकी बात को सुनकर असमंजस और दुविधा में पड़ गए।

परमपूज्य आचार्यप्रवर सूर्योदय से कुछ समय पूर्व 'अर्बन हाट' से प्रस्थित होकर तीन समुद्रों के संगम स्थल के निकट पधारे। सूर्य उदीयमान अवस्था में था। उसका अरुण रंग समुद्र में अपनी अरुणिमा बिखेरे हुए था। सैंकड़ों लोग इस दृश्य को उत्सुकता के साथ देख रहे थे। आचार्यप्रवर वहां पधारे तो ऐसा लगा मानों दो-दो सूर्य एक साथ उदित हुए हों। एक सूर्य सागर के उस पार था तो दूसरा इस पार। सैंकड़ों लोग अध्यात्मजगत के सूर्य आचार्यप्रवर के दर्शन के लिए वहां एकत्रित थे। आकाश में अब तक चन्द्रमा भी दृष्टिगोचर हो रहा था। चांद, सूर्य और सागर तीनों की उपस्थिति में निर्मलतर, प्रकाशमान और धीर-गंभीर आचार्यप्रवर को देखकर 'चंदेसु निम्मलयरा.....' श्लोक की सहज स्मृति हो रही थी। आचार्यप्रवर पश्चिम दिशा के अभिमुख होकर पट्टासीन हुए। संतों ने पूज्यप्रवर के समक्ष प्रशासन की बात को प्रस्तुत किया। आचार्यप्रवर ने सहजता के साथ फरमाया--'कार्यक्रम यहां नहीं रखकर और कहीं रख लेते हैं।' आचार्यप्रवर के इस फरमान के साथ कार्यकर्ताओं की दुविधा और असमंजस की स्थिति दूर हो गई।'

उपस्थित सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने तीन सागरों के तट पर अपने आराध्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से बृहत मंगलपाठ का श्रवण किया। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने पट्ट पर खड़े होकर अपने करकमलों से श्रद्धालुओं पर आशीष-वृष्टि की। यह दृश्य देखकर श्रद्धालुजन अभिभूत थे। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आज के प्रवास स्थल विवेकानन्द केन्द्र में रखना निर्णीत किया गया, जिसकी सूचना श्रद्धालुओं को दी गई।

तत्पश्चात् परम पूज्य आचार्यप्रवर तीन समुद्रों के संगम स्थल के अति निकट पधारे। यह धरती का छोर था। उसके बाद पानी-पानी नजर आ रहा था। हालांकि रंग आदि की दृष्टि से तीनों समुद्रों के पानी में भेद करना दुरूह कार्य था, किन्तु क्षेत्रीय सीमा के आधार पर बताया गया कि यह बंगाल की खाड़ी है, यह हिन्द महासागर है और यह अरब सागर है। अध्यात्म के महासागर आचार्यप्रवर के पदार्पण से मानों तीन समुद्रों के संगम स्थल पर चार समुद्रों का मिलन हो गया।

संगम स्थल से कुछ ही दूरी पर विवेकानन्द स्मारक और संत तिरुवल्लुवर की विशालकाय खड़ी मूर्ति दिखाई दे रही थी। विवेकानन्द स्मारक को 'विवेकानन्द रॉक मेमोरियल' के नाम से भी जाना जाता है। सन् १८९२ में स्वामी विवेकानन्द ने कन्याकुमारी में समुद्र के बीच स्थित चट्टान पर बैठकर ध्यान किया था और अपनी विदेश यात्रा की संपन्नता भी उन्होंने यहीं की थी। उस स्मृति में सन् १९७० में इस विशाल स्मारक की स्थापना की गई। उस स्मारक के पास करीब अड़तीस फुट ऊंचे आधार पर बनी लगभग पिच्यानवें फुट ऊंची संत तिरुवल्लुवर की प्रतिमा दिखाई दे रही थी। संत तिरुवल्लुवर तमिल के एक विख्यात कवि थे। उन्होंने 'तिरुक्कुल' नामक ग्रंथ की रचना की थी।

इन दोनों स्थान पर जाने के लिए पर्यटक नाव आदि का ही प्रयोग करते हैं। आचार्यप्रवर जहां से समुद्रों के संगम स्थल को निहार रहे थे, उसी के समीप गांधी स्मारक है। महात्मा गांधी सन् १९३७ में कन्याकुमारी आए थे और उनकी मृत्यु के बाद उनकी अस्थियां कन्याकुमारी में विसर्जित की गई थीं। इस स्मृति में इस स्मारक की स्थापना सन् १९५६ में हुई।

पूज्यप्रवर 'कन्याकुमारी' मंदिर के समीप से गंतव्य स्थल की ओर आगे बढ़े। इस मंदिर के संदर्भ में विभिन्न किंवदंतियां हैं। एक किंवदंती के अनुसार कन्या पार्वती ने शिव की प्राप्ति के लिए यहां वर्षों तक एक पांव पर खड़े-खड़े साधना की थी, इसलिए इस क्षेत्र का नाम कन्याकुमारी हो गया। यह मंदिर उनकी तपःस्थली के रूप में जाना जाता है। इस मंदिर का पूर्वी द्वार सदा बंद रखा जाता है, इसके भी पृथक-पृथक कारण प्रचलित हैं।

आचार्यप्रवर कन्याकुमारी के विवेकानंदपुरम में स्थित विवेकानन्द केन्द्र में पधारे। आज का प्रवास इसी केन्द्र के परिसर में ही स्थित 'सत्यकाम' (भवन) में हुआ। स्वामी विवेकानन्द की कन्याकुमारी यात्रा की स्मृति में इस विशाल केन्द्र की स्थापना सन् १९७२ में महाराष्ट्र के श्री एकनाथ रानाडे ने की थी। इस केन्द्र में विभिन्न सामाजिक प्रकल्प संचालित हैं। समुद्र के तट पर सघन वृक्षावलियों से युक्त केन्द्र का विशाल परिसर एक तपोवन-सा प्रतीत होता है।

शिष्य-शिष्याओं द्वारा गुरुवर का 'सरप्राइज' अभिनंदन

परमाराध्य आचार्यप्रवर हजारों किलोमीटर की दुष्कर और दुरुह पदयात्रा कर धरती के छोर पर स्थित कन्याकुमारी में पधारे थे, इसलिए चतुर्विध धर्मसंघ में स्वाभाविक रूप से उत्साह और उल्लास का वातावरण था। साधु-साध्वियां आचार्यप्रवर का अभिनंदन, वर्धापन और अभिवंदना करने के लिए आतुर थे। इसी के मद्देनजर परमपूज्य आचार्यप्रवर के अभिनंदन की योजना बनाई गई। पूज्यप्रवर के समक्ष अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित करने की बात की गई तो आचार्यप्रवर ने इसमें अपनी अरुचि ही जताई। आचार्यप्रवर ने तो आज के कार्यक्रम का विषय रख दिया--'सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' फिर भी शिष्य-शिष्याओं के उत्साह के कारण अभिनंदन कार्यक्रम की योजना साकार रूप लेती गई, ऐसा करना उनका अपना हक जो था।

परमपूज्य आचार्यप्रवर आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पधारे और पट्टासीन हुए। आचार्यप्रवर के नमस्कार महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके बाद शुरू हुआ महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की अगुवाई में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के अभिनंदन का 'सरप्राइज' कार्यक्रम।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वियों ने 'तुलसी पटधर के पटधारी कन्याकुंवरी आए' गीत के सामूहिक संगान के द्वारा आचार्यप्रवर की अभिवंदना की तो मुनिवृंद ने 'सिंधुत्रय के तट पर त्रिभुवन विभु आए हैं। बंगाल, हिन्द व अरब तीनों हर्षाए हैं।' गीत को समूह स्वर में प्रस्तुत कर पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी।

आर्षवाणी के द्वारा आर्हत वाङ्मय उद्गाता आचार्यप्रवर की अभिवंदना

साध्वीवर्याजी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना करते हुए कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी एक महान यायावर हैं। आपने देश के विभिन्न प्रान्तों की ही नहीं, विदेश की भी यात्रा की। अब आपने भारत की धरती के छोर कन्याकुमारी को पावन किया है। आपके चरणों में गतिशीलता के साथ-साथ सिद्धि निवास करती है। आज के इस पुनीत अवसर पर मैं इन परम पावन चरणों की अर्भ्यथना करती हूं, अभिवंदना करती हूं। आप जन-जन के कल्याण के पावन लक्ष्य से सुदीर्घ यात्रा कर रहे हैं। अपनी अहिंसा यात्रा के तीन आयामों के द्वारा आप जन-जन के मन को पवित्र बना रहे हैं। आपमें संकल्प की दृढ़ता है। यात्रा के दौरान कितनी-कितनी कठिनाइयां आईं, किन्तु आपके चरण उनके कारण कभी रुके नहीं। आपमें पौरुष की प्रखरता है। आपका जीवन पुरुषार्थ का पर्याय है। आप समाधायक हैं, जन-जन की समस्याएं, जिज्ञासाएं आपके माध्यम से समाहित होती हैं। लक्ष्य की निर्मलता,

संकल्प की दृढ़ता और पुरुषार्थ की प्रखरता के कारण यश हमेशा आपका सहगामी बना रहता है। सिंधुत्रय के तट पर मैं सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से आपश्री की अभिवंदना आर्षश्लोकों के माध्यम से करना चाहती हूं।'

साध्वीवर्याजी के साथ साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर आर्षवाणी (आचार्य अभिवंदना के श्लोकों) से आचार्यप्रवर की अभिवंदना की।

चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से एकादशमाधिशास्ता का अभिनंदन

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी ऐसे महापुरुष हैं, कामयाबी जिनके चरण चूमती रहती है। ऐसे कामयाब महापुरुष के कन्याकुमारी में आगमन के अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ हर्षित है, उल्लसित है, पुलकित है। आचार्यप्रवर के आचार्यकाल का अभी एक दशक भी पूर्ण नहीं हुआ है, किन्तु आपने अनेक इतिहास दोहराए हैं और अनेक नए इतिहास सृजित भी किए हैं। कन्याकुमारी पधारकर भी आपने इतिहास को दोहराया है। तेरापंथ धर्मसंघ की परंपरा में नवमें अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी भी यहां पधारे थे। यह भी संयोग है कि आचार्य तुलसी जब कन्याकुमारी पधारे थे, तब चैत्र कृष्णा षष्ठी थी और आज भी चैत्र कृष्णा षष्ठी है।

कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का मिलन होता है। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने आज उस स्थान को भी पावन बनाया। हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी जहां उछलकर गले मिल रहे हैं, वहां आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया, मानों तीनों समुद्रों को मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर यहां बहुत लम्बी यात्रा करके पधारे हैं। मैंने अपनी बात को कुछ पद्यों में ढालना चाहा है--

अहिंसा यात्रा प्रणेता समवसृत कन्याकुमारी,
हृदय-सागर में तरंगित हो रहा उल्लास भारी।
'चरन् वै मधु विन्दते' यह सूक्त स्मृतियों में सजाया,
भिक्षु के अनुभाव से दक्षिण धरा का छोर पाया।।१।।

आर्यवर तुलसी यहां आधी शताब्दी पूर्व आए,
आज उनके शिष्य श्रुतधर को स्वयं सागर बधाएं।
खड़ा जो स्मारक विवेकानन्द का इतिहास गाए,
भक्त लोगों ने यहीं पर फूल गांधी के बहाए।।२।।

पुलिन यह देखा दिखा दो अब भवाम्बुधि का किनारा,
अनुग्रह कर दो प्रभो! तो सफल हो अरमां हमारा।
भाव मंगलमय समर्पित कर रहा है संघ सारा,
गूंजता ही रहे नभ में जय-विजय का तुमुल नारा।।३।।

देव! उत्तर की धरा अब प्रतीक्षा करती तुम्हारी,
मिल गया आश्वास फिर भी लग रहा हर दिवस भारी।
करें सफल उपाय ऐसा 'स्पेस-टाइम' सिमट जाए,
प्यास कुछ बुझती रहे, सन्देश की गंगा बहाएं।।४।।

आचार्यप्रवर तीन आचार्यों का स्मरण करते रहते हैं। संभवतः आपका कोई भी प्रवचन ऐसा नहीं होता, जिसमें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का नाम नहीं आता हो। समय समय पर शेष आचार्यों का नाम भी आप लेते हैं। भिक्षु स्वामी का नाम तो आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से यदा-कदा सुना ही जा सकता है। हम लोग आचार्यप्रवर की उपासना में बैठते हैं तो कई बार आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से कभी धीमे तो कभी कुछ मुखर

रूप में सुनने को मिलता है--'बाबा भिक्षु' 'ऊँ भिक्षु'। मुझे तो ऐसा लगता है कि भिक्षु स्वामी तो आचार्यप्रवर के रोम-रोम में रमे हुए हैं।

आचार्यप्रवर कई वर्षों से अहिंसा यात्रा कर रहे हैं, यह यात्रा आगे भी चलती रहेगी। आज हम वहां पहुंच गए हैं, जहां से आगे नहीं बढ़ सकते हैं, मुड़ना होगा। इस अवसर पर धर्मसंघ चाहता है कि हम आचार्यप्रवर की अभिवंदना करें। आचार्यप्रवर स्वयं मंगलमय, अभिनन्दनमय हैं, फिर भी कुछ उपचार होता है, इसलिए औपचारिक रूप में भी हम आचार्यप्रवर का अभिनंदन करना चाहते हैं। मैं चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से अभिनंदन पत्र का वाचन कर रही हूं। इस पत्र में अहिंसा यात्रा और अहिंसा यात्रा के नायक दोनों का अभिनंदन किया गया है। (महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने स्थान पर खड़े होकर चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से स्वयं द्वारा लिखित अभिनंदन पत्र का वाचन किया।)

गुरुदेव! यह अभिनंदन पत्र धर्मसंघ की ओर से है। आज हम समुद्र तट पर गए तो मानों तीनों समुद्रों ने भी सोचा कि हम भी इस महापुरुष का अभिनंदन करें। समुद्रों में शंख सीपी, मोती आदि होते हैं। तीन समुद्रों की ओर से मैं तीन शंख आपको भेंट करना चाहती हूं। उसके साथ तीनों आचार्यों (आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी) की ओर से तीन स्वस्तिकों के द्वारा आपश्री के प्रति मंगलकामना करना चाहती हूं। इस अवसर पर सभी साधु-साध्वियां अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर आचार्यप्रवर का अभिनंदन करें। अहिंसा यात्रा के महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में चतुर्विध धर्मसंघ की भावभीनी वंदना। जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।' (साध्वीप्रमुखाजी के साथ उपस्थित जनमेदिनी ने इस घोष को तीन बार उच्चरित किया।)

साध्वीप्रमुखाजी ने अभिनंदन पत्र के साथ तीन स्वस्तिकों और तीन शंखों से युक्त उत्तरीय पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। मुख्यमुनिश्री ने उसे पूज्यप्रवर के गले में अर्पित किया। यह दृश्य देखकर उपस्थित जनता अभिभूत हो उठी। साध्वीप्रमुखाजी द्वारा चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से आचार्यप्रवर को अर्पित अभिनंदन पत्र की भाषा इस प्रकार है--

अभिनंदन पत्र

ऊँ अर्हम् ऊँ

- हिंसा के विकसित शस्त्रशिल्प को निःशस्त्रीकरण की दिशा देने वाली अहिंसा यात्रा का अभिनन्दन अभिनन्दन।
- जाति, सम्प्रदाय, अर्थ और सत्ता के उन्माद को सद्भावना, मैत्री और भाईचारे का पाठ पढ़ाने वाली अहिंसा यात्रा का अभिनंदन।
- अनैतिकता के सघन अंधकार में ईमानदारी के दीये जलाने वाली अहिंसा यात्रा का अभिनंदन।
- विनाश के गर्त में धकेलने वाली नशे की प्रवृत्ति को रूपान्तरित करने की सीख देने वाली अहिंसा यात्रा का अभिनंदन।
- पड़ाव-दर-पड़ाव नए अनुभवों के क्षितिज रोशन करने वाली अहिंसा यात्रा का अभिनंदन।
- अहिंसा यात्रा के मध्य कन्याकुमारी के सागर तट पर सागर से गंभीर अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन।
- आगम के आलोक से भीतर में उगते सूरज को दिखाने वाले सूर्य से अधिक तेजस्वी अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन।
- अशान्त मन को शान्ति प्रदान करने वाले चन्द्रमा से अधिक शीतल अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन।
- सिद्धि-शिखर पर पहुंचने की तीव्र अभीप्सा जगाने वाले साधना के शलाकापुरुष आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन।

- प्रथम साक्षात्कार में ही विपुल विश्वास और आश्वास जगाने वाले महान व्यक्तित्व का अभिनंदन।
- तीन देशों व सोलह राज्यों में अहिंसा का परचम लहराने वाले युगनायक, युगपुरुष आचार्य महाश्रमण की विजय यात्रा के महापड़ाव पर मंगल भावों के साथ-

जय जय नन्दा! जय जय भद्दा! भद्दं ते चिरकाल।
अणजीता जीती करो, जीतां री रिछपाल।।

कन्याकुमारी **धर्म परिवार**
२६ मार्च २०१६

चारों दिशाओं को पावन करने वाले ज्योतिचरण के चरणाभिषेक का मनोहारी दृश्य

मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर का वर्धापन करते हुए कहा--'परमपूज्य आचार्यप्रवर भारत के छोर पर पधारे हैं, कन्याकुमारी की धरा पर पधारे हैं, इस अवसर पर हर व्यक्ति के चेहरे पर उत्साह और उमंग दिखाई दे रहे हैं। हर कोई इन ज्योतिचरण के चरणकमलों की अभिवंदना करना चाहता है। 'चरण' शब्द के दो अर्थ होते है--चारित्र और पैर। आचार्यप्रवर की चारित्र की साधना शिखरों को छू रही है।

आज मैं 'चरण' शब्द के दूसरे अर्थ के संदर्भ में कुछ कहना चाहता हूं। आचार्यप्रवर के इन चरणों ने देश-विदेश की धरती को पावन किया है। ये वे ही चरण हैं, जिन्होंने पश्चिम से पूर्व और उत्तर से दक्षिण की धरती को पवित्र बनाया है। ये वे ही चरण हैं, जो कठिनाइयों, बाधाओं और प्रतिकूलताओं में कभी डोले नहीं। ये वे ही चरण हैं, जो पथरीले पथ, रेतीली भूमि, उबड़-खाबड़ मार्ग, सर्दी, गर्मी, कीचड़ आदि किसी भी बाधा की परवाह किए बिना निरंतर गतिमान हैं। ये वे ही चरण हैं, जिन्होंने जैसलमेर के रेगिस्तान, कच्छ के रण, काठमांडू के पर्वतीय पथ, पूर्वांचल के नदी-नालों और असम के जंगल-बागानों की यात्रा की है। आचार्यप्रवर के इन चरणों ने उग्रवाद, नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्रों, जहां दिन में जाने से भी लोग भय खाते हैं, की यात्रा की है। उत्तरप्रदेश और नेपाल की बर्फीली हवा, असम की मूसलाधार वर्षा और दक्षिण भारत की पसीने से नहलाने वाली गर्मी भी इन चरणों को नहीं रोक पाई।

इन चरणों को छूकर लाखों भक्त अपने आपमें धन्यता की अनुभूति करते हैं। इन चरणों ने कितने गांवों, कितने कस्बों, कितने शहरों, कितनी ढ़ाणियों और कितने घरों को पावन किया है। इन चरणों ने अब तक ४६००० से ज्यादा किलोमीटर की यात्रा कर ली है। भारत के कुछ केन्द्रशासित प्रदेशों सहित २१ राज्यों को इन चरणों से पावन होने का अवसर मिला है। हाथ से नक्शा बनाना भी कठिन है, किन्तु आचार्यप्रवर के यह चरण कदम-कदम चलकर मानों भारत का नक्शा बना रहे हैं। इन चरणों ने अहिंसा यात्रा के दौरान कन्याकुमारी तक करीब ११००० कि.मी. की यात्रा संपन्न कर ली है। इन चरणों ने केलवा से कच्छ, कच्छ से काठमांडू, काठमांडू से काजीरंगा, काजीरंगा से कोलकाता, कोलकाता से कन्याकुमारी की यात्रा की है। इतनी प्रलम्ब यात्रा के बाद भी ये चरण थके नहीं हैं, तभी आचार्यप्रवर ने सन् २०२३ तक के अपने चतुर्मास घोषित कर लिए हैं। भक्तों के उद्धार के लिए ये चरण निरंतर गतिमान हैं। इसलिए हम भक्त लोग आज इन चरणों का अभिनंदन कर रहे हैं। इन चरणों की शरण में आकर हम अपना कल्याण कर सकते हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर! मैंने एक बात सुनी है कि जिस समय परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को 'युगप्रधान' पद समर्पित किया गया था, उस समय आपश्री ने उनके चरणों का अभिषेक किया था। आज मैं भी आपश्री के चरणों का अभिषेक करना चाहता हूं। ये चरण इतने पावन है कि इनका तो बार-बार अभिषेक किया जाना चाहिए। इन चरणों पर हम भक्तों का अधिकार है। मैं सभी अग्रणी सन्तों से निवेदन करना करूंगा कि मेरे द्वारा पूज्यप्रवर के चरणों का अभिषेक किया जा रहा है, आप सभी पधारकर इसमें मेरा सहयोग करें।'

मुख्यमुनिश्री ने पूज्यचरणों का अभिषेक किया। अग्रणी संत इस कार्य में उनके सहयोगी बने। इस दृश्य को देखकर साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं के श्रद्धाभाव चरम को छूने लगे। इस दौरान साध्वीवृन्द ने 'जय-जय नंदा, जय-जय भद्दा, जय-विजय तुम वरज्यो, अणजीत्या नै जीत जीत्यां री रक्षा रूड़ी करज्यो जी, म्हारा पूज्य परम गुरु चंगो सुयश जग लीज्यो जी।' का संगान कर पूज्यप्रवर को वर्धापित किया।

परम पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन पाथेय

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' मानों यह जप्य पाठ है। (पूज्यप्रवर ने कुछ समय तक 'सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' का जप करवाया।) सिद्धों को अनेक उपमाओं या उपमा वाले शब्दों से भी ज्यादा उनका अतिशय बताते हुए अभिनंदित, अभिवंदित, कीर्तित, स्तुत किया गया है। उनकी स्तवना में रचित एक श्लोक का एक चरण यह भी है--'सागरवरगंभीरा' सिद्ध सागर के समान गंभीर होते हैं। सागर की गहराई प्रसिद्ध है। अष्टकर्म क्षीण कर चुके सिद्ध तो परमात्मा हैं। उनकी जितनी गंभीरता तो वर्तमान में हमारे में आ सके, यह असंभव जैसी लग रही है। कुछ अंशों में भी उनकी गंभीरता हमारे में आ सके, ऐसा प्रयास अभिलषणीय है।

आज हमने तीन सागरों (महासागर सहित) के सामीप्य में 'सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' का पाठ किया है, सिद्धों का स्मरण किया है। जैन वाङ्मय में अनेक स्थानों पर सागर या उसके पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त हुए हैं। आगम की कुछ सूक्तियों पर मैंने ध्यान दिया--'संसारो अण्णवो वुत्तो' संसार को अर्णव (सागर) कहा गया है। जन्म-मरण रूपी संसार एक सागर है, जिसे आम भाषा में भवसागर कहा जाता है। गुरु के लिए कहा गया 'तेसिं गुरूणं गुणसागरणं' गुणों के सागर गुरु। गुणों से भरे हुए सागर का मिलना विशेष उपलब्धि होती है। आगम में कहा गया--'संसार सायरे घोरे।' यह संसार सागर घोर होता है। आगम में महासागर की भी बात है 'जहा महासागरमुत्तरित्ता'। मैं तो सोचता हूं कि बत्तीस आगम अपने में ज्ञान के महासागर हैं। हम इनकी गहराई में उतरते रहें।

भगवान महावीर तो तीर्थंकर, वीतराग पुरुष थे। उनसे संबद्ध जैन शासन के श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में हम साधना कर रहे है। आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम गुरु हुए थे। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली। मैंने तो अतीत के दो आचार्यों को देखा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को मैंने इन आंखों से निहारा था, उनके चरणों में मस्तक रखा था और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को भी मैंने इन आंखों से देखा था, उनको पदवन्दन किया था। मैं परमपूज्य आचार्य भिक्षु, परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं।

हमने यहां आकर तीन सागरों (सागर/महासागर) को देखा। सागर में कितनी विराटता होती है। सागर में साम्यभाव होता है। सामान्यतया वह कितना समता में रहता है, मर्यादा में रहता है, आक्रोश में नहीं आता। सागर में गतिमत्ता भी होती है, उसमें तरंगें भी उठती हैं, मानों वह निठल्ला नहीं है। सागर में रहस्यता भी होती है। यह दृश्य सागर भी हमारी सृष्टि का एक तत्त्व है। इस तिर्यक्लोक में कितने सागर हैं। सबको देखना तो अभी हमारे लिए मुश्किल है। सागर से हम साम्यभाव, गतिमत्ता और रहस्यता की प्रेरणा प्राप्त करें।

आज हम लोग कन्याकुमारी में सागरों के परिपार्श्व में बैठे हैं। प्रातःकाल हम लोग सागरत्रय के संगम स्थल के निकट गए थे और वहां मैंने बृहत् मंगलपाठ का उच्चारण किया। मेरे साथ संत भी थे और काफी लोग भी वहां थे। बाद में मैं समुद्रों के संगम स्थल के अतिनिकट भी गया। मुझे वहां बताया गया कि कौनसा पानी हिन्द महासागर का है, कौनसा अरब सागर है और कौनसा बंगाल की खाड़ी का है। हमारे भीतर भी तीन सागरों का संगम रहना चाहिए। वे तीन हैं--ज्ञान सागर, दर्शन सागर और चारित्र सागर। चारित्रात्माओं और श्रावक समाज दोनों के भीतर इन तीन समुद्रों का संगम रहे। ऐसा न हो कि ज्ञान अलग रहे, दर्शन अलग रहे और चारित्र अलग

रहे। तीनों का संगम बना रहे। संगम इस रूप में रहे कि कभी हम महान महासागर मोक्ष में पहुंच जाएं। मोक्ष में पहुंचने के बाद ज्ञान सागर, दर्शन सागर और चारित्र सागर उसमें विलीन हो जाते हैं।

जैन शासन में हम लोग तेरापंथ धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं। हमारा धर्मसंघ क्षेत्रों और व्यक्तियों की दृष्टि से काफी व्यापक है, फैला हुआ है। कितने-कितने प्रान्तों में हमारे श्रावक-श्राविकाएं निवास करते हैं। हमारे साधु-साध्वियां और समणश्रेणी के सदस्य कितने-कितने क्षेत्रों में जाते हैं। स्वयं परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने कितनी यात्रा की। वे कोलकाता भी पधारे और दक्षिण भारत के इस कन्याकुमारी में भी पधारे थे। कितनी प्रलम्ब यात्रा गुरुदेव ने की। जैसा कि साध्वीप्रमुखाजी ने फरमाया कि आज से पचास वर्ष पूर्व चैत्र कृष्णा षष्ठी को गुरुदेव तुलसी कन्याकुमारी में थे। आज भी चैत्र कृष्णा षष्ठी है और मैं भी आज कन्याकुमारी में हूं। गुरुदेव तुलसी हमारे गुरु थे, निर्माता थे और स्थूल भाषा में कहूं तो भाग्यविधाता थे। वे जहां पधारे थे, ठीक ५० वर्ष बाद आज मैं भी वहीं (कन्याकुमारी मैं) स्थित हूं। पचास वर्ष पूर्व जो घटित हुआ, आज मानों वह पुनरावृत्त हुआ है।

साधु-साध्वियों ने अभिवंदना का उपक्रम भी रख दिया। मुझे तो कोई जानकारी ही नहीं दी गई थी कि इस रूप में कई उपक्रम रखे गए हैं। मुझे नहीं पता कि पचास वर्ष पूर्व कन्याकुमारी में किसी ने गुरुदेव तुलसी का अभिनंदन किया था या नहीं। आज साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यमुनि, साध्वीवर्या और साधु-साध्वियों ने अभिवंदना/अभिनंदन का उपक्रम रख लिया। इस अभिवंदना में सूझबूझ, बुद्धिमता झलक रही थी और सागर पास में है तो कुछ गहराई/रहस्यता की बात भी इस उपक्रम में रखी गई। वैसे ये अभिवंदन और अभिनंदन तो एक उपचार है। हम लोग तो अपना कार्य करते हैं। गुरुदेव तुलसी ने कितना कार्य किया, कितनी यात्रा की। आचार्य महाप्रज्ञजी मुनि रूप में यहां पधारे थे। उन्होंने अपने जीवन में मानों ज्ञान सागर में विशेषतया पैठने का प्रयास किया।

हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियां और समणियां कहां-कहां विचरण कर रहे हैं, प्रवास कर रहे हैं। श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) से क्षेत्रीय दृष्टि से मैं अभी काफी दूर हूं। कहां जयपुर, जहां उनका प्रवास हो रहा है और कहां यह भारत की धरती का छोर कन्याकुमारी, जहां मैं स्थित हूं। इस अवसर पर मैं यहीं बैठे-बैठे श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री को विशेष भावना के साथ वंदना करता हूं (जयपुर से समागत श्री नरेश मेहता पूज्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुए और मंत्रीमुनिश्री के संवाद सुनाए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें इस संदर्भ में कुछ वक्तव्य प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया।)

हमारे साधु-साध्वियां सेवा करने वाले हैं, कार्य करने वाले हैं। हमारी इस यात्रा में भी कितने साधु-साध्वियां साथ हैं। मार्ग की कठिनाइयों को झेलते हुए, यदा-कदा सुबह-शाम दोनों समय विहार करते हुए, गर्मी को सहते हुए, हमारे साथ रह रहे हैं, चल रहे हैं। साध्वीप्रमुखाजी भी इस यात्रा में साथ हैं। आप भी कितना कार्य करती हैं। मुख्यनियोजिकाजी अभी कोयम्बत्तूर में है, वे भी यात्रा में प्रायः साथ रहते हैं। साध्वीवर्या और मुख्यमुनि साथ हैं। कितने-कितने साधु-साध्वियां भी साथ हैं। ये कितना श्रम करते हैं (साधु-साध्वियों की ओर संकेत करते हुए।) मैं तो आप सबका अभिवंदन करता हूं कि आप लोग किस प्रकार इतनी लम्बी और कुछ कठिन यात्रा में भी हमारे साथ-साथ चल रहे हैं। मैं तो गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों का अभिनंदन करता हूं (साधु-साध्वियों ने विनत भाव से पूज्यप्रवर को वंदन किया।)

मेरे सहित हमारे धर्मसंघ की सभी चारित्रात्माएं ज्ञान सागर, दर्शन सागर और चारित्र सागर में निमज्जन करते रहें। जब तक मुक्ति न मिल जाए, हमारी चेतना में इन तीनों सागरों का संगम बना रहे। समण-समणियां भी अपनी सीमा में इन तीन सागरों की साधना-आराधना करते रहें। श्रावक-श्राविकाएं भी ज्ञान सागर, दर्शन सागर और देश चारित्र सागर में निष्णात बनते रहें।

हम मुख्यतया भारत राष्ट्र में रहते हैं। भारत ऐसा देश है, जहां कितने साधु-संत साधना कर रहें हैं। ज्ञान का कितना खजाना भारत के पास है। संस्कृत, प्राकृत आदि अनेक भाषाओं में ज्ञान का खजाना है। इस राष्ट्र के

लोग सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को गहराई से अपनाकर चलते रहें तो भारत देश और ज्यादा अच्छा बन सकता है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज हम विवेकानन्द केन्द्र में आएं हैं। सुबह जब मैं यहां आया तो मुझे जैन विश्व भारती की स्मृति हो गई। जिस प्रकार जैन विश्व भारती में हम लोग भ्रमण करते थे, उसी प्रकार जब मैं इस प्रवास स्थल में आने के लिए इस परिसर में चल रहा था तो मुझे जैन विश्व भारती का स्मरण हो गया। इसका कुछ-कुछ रूप मुझे जैन विश्व भारती से मिलता-सा लगा। (साध्वीप्रमुखाजी ने अपने स्थान पर खड़े होकर पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'जब जैन विश्व भारती की स्मृति हो ही गई है तो आज आप वहां पधारने की भी घोषणा करने की कृपा कराएं। आचार्यप्रवर ने कहा--)'साध्वीप्रमुखाजी फरमा रहे हैं कि जैन विश्व भारती में जाने की घोषणा करें, तो ठीक है, राजस्थान जाना है और वहां छापर में चतुर्मास करना है। राजस्थान के प्रवास के दौरान जैन विश्व भारती में भी जाने का भाव है और यथानुकूलता वहां प्रवास करने का भाव है।'

पूज्यप्रवर ने मुमुक्षु धीरज दक (बेंगलुरु) को ३ जुलाई २०१९ के दिन बेंगलुरु में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करते हुए साधु प्रतिक्रमण सीखने की स्वीकृति प्रदान की।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् विवेकानन्द केन्द्र की ओर से श्री राजकुमारजी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में श्रद्धाभिव्यक्ति दी। विवेकानन्द केन्द्र के लोग पूज्यप्रवर को अर्पित करने की भावना से फूलों की माला, फल-फूल, कलश, नारियल आदि भी लाए थे। साधुचर्या की अवगति पाकर उन लोगों ने अपनी भावना का संवरण किया। केन्द्र की ओर से शंखध्वनि के माध्यम से पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की गई। कार्यक्रम के दौरान बाल साध्वियों ने पूज्यप्रवर के कन्याकुमारी पदार्पण के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विवेकानन्द केन्द्र से संबंधित लोगों की प्रार्थना पर सायंकाल आचार्यप्रवर विवेकानन्द केन्द्र परिसर में स्थित श्री 'रामायण दर्शनम्' में पधारे। यहां रामायण से संबंधित चित्रों को कलात्मक रूप में सजाया गया है। आचार्यप्रवर ने उनका अवलोकन किया। संबद्ध लोगों के अनुरोध पर पूज्यप्रवर ने वहां विजिटर्स बुक के लिए अपना मंगल संदेश प्रदान किया। वह इस प्रकार हैं--'विवेकानन्द केन्द्र का परिसर सुरम्य लगा। 'रामायण दर्शनम्' बहुत ही आर्कषक लगा और प्रेरणास्पद भी लगा। इस परिसर को देखने से मुझे जैन विश्व भारती की याद आ गई।'

स्वरचित इतिहास को सहेजा आशुरचना में

रात्रि में अर्हत् वंदना के उपरान्त पूज्यप्रवर ने आशुरचना के रूप में ग्यारह श्लोकों की रचना की, जिसमें कन्याकुमारी आगमन और यहां समायोजित कार्यक्रम आदि से संबंधित इतिहास को संक्षेप में गुंफित कर दिया। पूज्यप्रवर द्वारा रचित श्लोक इस प्रकार हैं--

सागरत्रय सामीप्ये, वयमद्य समागताः।
बृहत्मंगलपाठोऽपि, प्रातःकाले कृतो मया॥ १॥

संगमस्य समीपत्वे, जातः साधुसमागमः।
सम्मर्दश्च जनानां हि, सुन्दरस्तत्र लोकितः॥ २॥

श्रावक-श्राविकावृन्दं, स्थितमाचार्यसम्मुखे।
कार्यक्रमव्यवस्थाऽपि, कृता तत्र सुसाधुभिः॥ ३॥

कार्यक्रमो न संजातः, प्रशासनेन हेतुना।
किंचित् विलोकनं कृत्वा, प्रस्थितं मयका ततः॥४॥

क.कु. क्षेत्रे समायाताः, सप्तत्रिंशत् सुसाधवः।
साध्वयोऽपि च समायाताः, ताषां संख्यां प्रकथ्यते।।५।।
पंचाशच्च चतस्रश्च, नेमासूनुश्च संघनीः।
सर्वं सम्मेल्य संजाता, संख्या द्विनवतिर्वरा।।६।।
भारतदेशस्य भागोऽयं, चरमो लोक्यते जनैः।
अस्माकं भावना भूयात्, चरमं शरणं भवेत्।।७।।
संसारसागरात् घोरात्, प्राप्नुयामः परं पदम्।
धर्मस्य शरणं श्रेष्ठं, तेन मुक्तिरवाप्यते।।८।।
गोपनीयतया जाता, कार्यक्रमसुयोजना।
अभिषेक विधिश्चाऽपि, रचितः साधुभिर्वरैः।।९।।
विवेकानंदकेन्द्रेऽद्य, प्रवासः जायते शुभः।
सुरम्यं दृश्यते स्थानं, स्याज्जैनविश्वभारती।।१०।।
वीरं भिक्षुं महाप्रज्ञं, महान्तं तुलसीगुरुम्।
श्रद्धाभावेन युक्तोऽहं, पौनःपुण्यं स्मराम्यहम्।।११।।

भवसागर के छोर पर पहुंचाने वाले आचार्यप्रवर के साथ धरती के छोर पर पहुंचे साधु-साध्वियां

परम पूज्य आचार्यप्रवर के साथ ३७ संत तथा साध्वीप्रमुखाजी आदि ५४ साध्वियां भी कन्याकुमारी पहुंचे। ज्ञातव्य है कि गुरुदेव तुलसी जब पचास वर्ष पूर्व यहां पधारे थे, तब १७ संत और २७ साध्वियां उनके साथ थीं। आचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ कन्याकुमारी पहुंचने वाले साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं-

१. मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी	२. मुनिश्री धर्मरुचिजी	३. मुनिश्री चैतन्यकुमारजी
४. मुनिश्री दिनेशकुमारजी	५. मुनिश्री ऋषभकुमारजी	६. मुनिश्री कुमारश्रमणजी
७. मुनिश्री रजनीशकुमारजी	८. मुनिश्री कोमलकुमारजी	९. मुनिश्री योगेशकुमारजी
१०. मुनिश्री जम्बूकुमारजी (मिजूंर)	११. मुनिश्री कीर्तिकुमारजी	१२. मुनिश्री विश्रुतकुमारजी
१३. मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी	१४. मुनिश्री मननकुमारजी	१५. मुनिश्री अक्षयप्रकाशजी
१६. मुनिश्री आकाशकुमारजी	१७. मुनिश्री नयकुमारजी	१८. मुनिश्री दीपकुमारजी
१९. मुनिश्री गौतमकुमारजी	२०. मुनिश्री सुधांशुकुमारजी	२१. मुनिश्री अनुशासनकुमारजी
२२. मुनिश्री मृदुकुमारजी	२३. मुनिश्री गौरवकुमारजी	२४. मुनिश्री हितेन्द्रकुमारजी
२५. मुनिश्री शुभंकरजी	२६. मुनिश्री अनेकान्तकुमारजी	२७. मुनिश्री पुनितकुमारजी
२८. मुनिश्री ध्रुवकुमारजी	२९. मुनिश्री वर्धमानकुमारजी	३०. मुनिश्री विनम्रकुमारजी
३१. मुनिश्री प्रिंसकुमारजी	३२. मुनिश्री नमनकुमारजी	३३. मुनिश्री नम्रकुमारजी
३४. मुनिश्री पार्श्वकुमारजी	३५. मुनिश्री सत्यकुमारजी	३६. मुनिश्री केशीकुमारजी
३७. मुनिश्री शुभम्कुमारजी		
१. साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी	२. साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशाजी	३. साध्वीश्री कल्पलताजी
४. साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी	५. साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी	६. साध्वीश्री लब्धिश्रीजी
७. साध्वीश्री चित्रलेखाजी	८. साध्वीश्री शारदाश्रीजी	९. साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी
१०. साध्वीश्री अनुशासनाश्रीजी	११. साध्वीश्री हेमयशाजी	१२. साध्वीश्री श्रुतयशाजी
१३. साध्वीश्री शुभ्रयशाजी	१४. साध्वीश्री ऋजुबालाजी	१५. साध्वीश्री आस्थाश्रीजी

१६. साध्वीश्री सविताश्रीजी १७. साध्वीश्री शशिप्रभाजी १८. साध्वीश्री दर्शनविभाजी
१९. साध्वीश्री आरोग्यश्रीजी २०. साध्वीश्री सुनन्दाश्रीजी २१. साध्वीश्री वंदनाश्रीजी
२२. साध्वीश्री पुनीतयशाजी २३. साध्वीश्री सुदर्शनप्रभाजी २४. साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी
२५. साध्वीश्री लक्षितप्रभाजी २६. साध्वीश्री आराधनाश्रीजी २७. साध्वीश्री स्वस्तिकप्रभाजी
२८. साध्वीश्री कौशलप्रभाजी २९. साध्वीश्री विशालयशाजी ३०. साध्वीश्री चारित्रयशाजी
३१. साध्वीश्री कार्तिकयशाजी ३२. साध्वीश्री मीमांसाप्रभाजी ३३. साध्वीश्री हिमांशुप्रभाजी
३४. साध्वीश्री मैत्रीयशाजी ३५. साध्वीश्री प्रांजलयशाजी ३६. साध्वीश्री राजुलप्रभाजी
३७. साध्वीश्री चैतन्यप्रभाजी ३८. साध्वीश्री प्रगतिप्रभाजी ३९. साध्वीश्री सिद्धार्थप्रभाजी
४०. साध्वीश्री विशालप्रभाजी ४१. साध्वीश्री प्रफुल्लप्रभाजी ४२. साध्वीश्री शरदयशाजी
४३. साध्वीश्री नम्रताश्रीजी ४४. साध्वीश्री ऋद्धिप्रभाजी ४५. साध्वीश्री कमनीयप्रभाजी
४६. साध्वीश्री आदित्यप्रभाजी ४७. साध्वीश्री चारितार्थप्रभाजी ४८. साध्वीश्री वैभवप्रभाजी
४९. साध्वीश्री आगमप्रभाजी ५०. साध्वीश्री शौर्यप्रभाजी ५१. साध्वीश्री मध्यस्थप्रभाजी
५२. साध्वीश्री धैर्यप्रभाजी ५३. साध्वीश्री रत्नप्रभाजी ५४. साध्वीश्री तेजस्वीप्रभाजी

शासन शिरमौर अब उत्तर की ओर

२७ मार्च। धरती के छोर को छूने वाले ज्योतिचरण आज उत्तराभिमुखी बन गए, क्योंकि अब दक्षिण दिशा में और आगे बढ़ना संभव नहीं था। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कन्याकुमारी से टी. करुणाकुल्लम की ओर प्रस्थान किया। यात्रा की दिशा बदली तो गत दिनों प्रातःकालीन विहार के दौरान विहार मार्ग के बांयीं ओर रहने वाला सूर्य आज दांयीं ओर दिखाई देने लग गया। आम, पाइनएप्पल, नारियल, केला आदि के हजारों वृक्ष विहार मार्ग के आसपास दृष्टिगोचर हो रहे थे। पहाड़ों से युक्त आज का विहार पथ प्राकृतिक सुषमा धारण किए हुए था। कन्याकुमारी से कुछ दूर पहुंचने पर 'पवनचक्कियां' दिखाई देने लगीं। प्रारम्भ में तो लगा कि उनकी संख्या ज्यादा नहीं है, किन्तु गंतव्य की निकटता के साथ उनकी संख्या बढ़ती गई। हर ओर पवनचक्कियों के घूमते हुए पंखे ही नजर आ रहे थे। वेग के साथ बहने वाली हवा समुद्र के इस परिपार्श्ववर्ती क्षेत्र में हजारों की संख्या में पवनचक्कियों के लगाने के कारण को अनुमानित करवा रही थी। आसपास खड़े पहाड़ों से टकराकर लौटने वाली हवा उन पंखों को ओर भी गति दे रही थी। करीब १२.४ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर टी. करुणाकुल्लम में स्थित अलामेलु विद्याश्रम मेट्रिक हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रवास स्थल के चारों ओर दूर-दूर तक बड़े और मध्यम आकार की पवनचक्कियां दृष्टिगोचर हो रही थीं।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में पुनर्जन्म से बचने के लिए अकषाय की साधना की प्रेरणा प्रदान की।

दीक्षा दिवस पर भगवान ऋषभ के प्रति श्रद्धा प्रणति

२८ मार्च। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः टी. करुणाकुल्लम से पानागुड़ी की ओर प्रस्थान किया। पहाड़, पवन चक्की ओर हवा इन तीनों का योग आज भी प्रायः पूरे विहार में रहा। हालांकि बादलों के अभाव और विहार पथ के आसपास वृक्षों की अल्पता के कारण सूर्य तीव्रता के साथ अपना आतप बरसा रहा था, किन्तु मंद-मंद हवा तापमान को नियंत्रित बनाए हुए थी। बताया गया कि एक पवन चक्की को लगाने में करोड़ों रूपयों का व्यय होता है। ऐसे में इस क्षेत्र में हजारों पवनचक्कियों को देखकर कोई चकित हो सकता है, किन्तु इन पवनचक्कियों से होने वाला लाभ इन्वेस्टर्स को बड़े इन्वेस्टमेंट की ओर आकर्षित कर लेता है। विहार मार्ग के आसपास टमाटर, मिर्ची, भिंडी आदि की खेती भी अच्छी मात्रा में दिखाई दे रही थी। बी.एम.एम.स्कूल के समीप उसके ऑनर श्री मुरली

तथा प्रिंसिपल श्री संजीवी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर विद्यालय परिसर में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर लगभग १४.२ कि.मी. का विहार कर पानागुड़ी में स्थित वेट कॉलेज ऑफ एज्युकेशन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। वेट कॉलेज ऑफ एज्युकेशन के ऑनर और चेयरमेन श्री विक्टर सेल्वम, सेक्रेट्री श्री डोनाल्ड आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में दुःखमुक्ति के लिए आत्मानुशासन को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज चैत्र कृष्णा अष्टमी है। भगवान ऋषभ का दीक्षा कल्याणक दिवस है। इस भरत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर हुए--भगवान ऋषभ। उनका जीवन कुछ व्यापक रहा। उन्होंने मानों मानव को प्रशिक्षण देने का कार्य किया, जीवन जीना सिखाया, सांसारिक कार्य भी सिखाए। वे गार्हस्थ्य में रहते हुए राजा भी बने।

भगवान ऋषभ ने राजकीय दायित्व संभाला और बाद में उन्होंने आज के दिन अर्थात् चैत्र कृष्णा अष्टमी को मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। मुनि दीक्षा ग्रहण के साथ मानों उनका लम्बा तप प्रारम्भ हो गया। दीक्षा के बाद एक वर्ष से ज्यादा समय तक वे निराहार रहे, उन्हें भिक्षा नहीं मिली। लोगों ने सोचा होगा कि इतने बड़े व्यक्ति को रोटी-पानी क्या दें, इन्हें तो हीरे, पन्ने, माणक, मोती आदि दें। लोग वर्षीतप करते हैं किन्तु भगवान ऋषभ का वर्षीतप आज के वर्षीतप से भिन्न था। भगवान ऋषभ ने तो लगातार एक वर्ष से अधिक समय तक निराहार तप किया। आज का वर्षीतप तो एक दिन उपवास और एक दिन खाना--इस रूप में होता है।'

कार्यक्रम के दौरान जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के वाइस चांसलर श्री बच्छराज दूगड़ और तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला ने जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें--प्रो. दयानंद भार्गव द्वारा लिखित 'स्टडीज इन जैन आगम्स', डॉ. दलपतसिंह बाया द्वारा अनूदित 'भगवती आराधना (मूलराधाना)', प्रो. एस.आर. व्यास द्वारा लिखित 'जैनिज्म ए लिविंग रियलिज्म', डॉ. साध्वी चैतन्यप्रभाजी द्वारा लिखित 'जैन थ्योरी ऑफ नोलेज' तथा प्रो. सुषमा सिंघवी द्वारा लिखित 'जैन थ्योरी ऑफ नॉन पजेसन' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित कीं।

आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति श्री बच्छराजजी दूगड़ तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराजजी बैताला ने साहित्य लोकार्पित किया। जैन विश्व भारती संस्थान शिक्षा और शोध का बड़ा और अच्छा केन्द्र है, जो जैन विश्व भारती से जुड़ा हुआ है। गुरुदेव तुलसी उसके प्रथम और आचार्य महाप्रज्ञजी उसके द्वितीय अनुशास्ता रहे। यह संस्थान ज्ञान विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहे, विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार देने का प्रयास भी चलता रहे। संस्थान खूब अच्छा विकास करता रहे।'

वरदान है आचार्यश्री महाश्रमणजी का पदार्पण और प्रवास

वेट कॉलेज ऑफ एज्युकेशन के चेयरमेन श्री विक्टर सेल्व मुथू, सेक्रेट्री श्री डोनाल्ड आदि तथा संस्थान में अध्ययनरत बी.एड. की छात्राएं कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुए।

श्री डोनाल्ड ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि आज हमारे इस शिक्षण संस्थान में अहिंसा के दूत आचार्यश्री महाश्रमणजी आए हैं। मैं इस अवसर पर सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार की ओर से आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री भारत के विभिन्न प्रान्तों और नेपाल व भूटान की धरती की पदयात्रा कर सबको अहिंसा का संदेश दे रहे हैं, यह एक महान कार्य है। सचमुच मैं आचार्यश्री के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ। जैन धर्म के इष्ट जिन होते हैं। उन्हें विक्टर भी कहा जा सकता है। आज आचार्यश्री 'विक्टर' के रूप में हमारे इस संस्थान में पधारे हैं। यह भी संयोग है कि हमारे चेयरमेन का नाम भी विक्टर है। आचार्यश्री का यहां एक दिन का प्रवास होना हमारे जीवन के लिए एक वरदान है। हम इसके

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

लिए आचार्यश्री के आभारी हैं।'

चेयरमेन श्री मुथू ने पूज्यप्रवर के समक्ष सफेद रंग के कुछ वस्त्र उपहार स्वरूप प्रस्तुत किए। आचार्यप्रवर ने उनसे कहा--'हम इन वस्त्रों को तो ग्रहण नहीं कर सकते, हम आपकी भावना स्वीकार कर रहे हैं।'

आचार्यप्रवर ने संस्थान से जुड़े लोगों और छात्राओं को जैन साधुचर्या के विभिन्न नियमों व अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान की तो वे लोग अपने स्थान पर खड़े होकर कृतसंकल्प बने। तत्पश्चात आचार्यप्रवर ने बीएड की छात्राओं की विभिन्न जिज्ञासाओं के समाधान प्रदान किए।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से विद्या संस्थान में उत्साह और उमंग का वातावरण छाया हुआ था। विद्यालय से संबंधित अधिकारीगण, शिक्षक और विद्यार्थी यदा-कदा पूज्यसन्निधि में पहुंचकर पावन संबोध और पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे।

उपासक प्रशिक्षण शिविर : एक सूचना

परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आगामी २२ जुलाई से १ अगस्त तक बेंगलुरु में उपासक प्रशिक्षण शिविर की समायोजना की जा रही है। यह शिविर दो चरणों में आयोज्य है--

- २२ से ३० जुलाई के सायं ४ बजे तक समायोज्य प्रथम चरण उपासक बनने की इच्छुक व्यक्तियों के लिए है। २२ जुलाई को मध्याह्न में आयोज्य प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयनित व्यक्ति ही इस शिविर में प्रवेश पा सकेंगे।
- ३० जुलाई से १ अगस्त के सायं ४ बजे तक आयोज्य शिविर का दूसरा चरण सेमिनार व संगोष्ठी के रूप में रहेगा। इस चरण में प्रवक्ता एवं सहयोगी उपासक संभागी बन सकेंगे।

इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए मोबाईल नं. ९३२७०७१३७६, ९४१७९४४८६२ पर संपर्क किया जा सकता है।

नवीन घोषित चतुर्मास

साध्वी सत्यप्रभाजी--शाहीबाग, अहमदाबाद
साध्वी रत्नश्रीजी (लाडनूं) --अहमदाबाद, पश्चिम

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला